MA-414

4.2 X

l number of printed pages–9

14 (HIN–4) 4·1 (N/O)

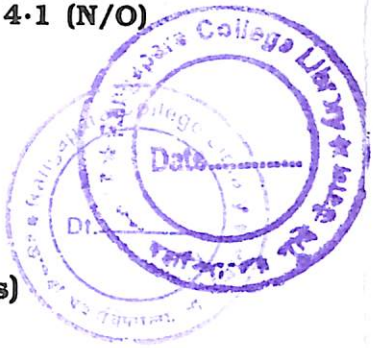

2019

HINDI

Paper : 4·1

(New Syllabus & Old Syllabus)

(Ādhunik Kāvya–II)

Full Marks : 64/80

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

(New Syllabus)

Full Marks : 64

खण्ड-क

निम्नलिखित अवतरणों में से ***किन्हीं दो*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) कुसुम और कामिनी, बहुत सुन्दर दोनों होते हैं,
पर, तब भी नारियाँ श्रेष्ठ हैं कहीं कान्त कुसुमों से,
क्योंकि पुष्प हैं मूक और रूपसी बोल सकती है।
सुमन मूक सौन्दर्य और नीरयाँ सवाक् सुमन हैं।

Contd.

(ख) उतना जो अंश हमारे मन का है
वह अर्द्ध सत्य से, ब्रह्मास्त्रों के भय से
मानव-भविष्य को हरदम रहे बचाता
अंधे संशय, दासता, पराजय से!

(ग) और विजय क्या है?
एक लम्बा और धीमा
और तिल-तिल कर फलीभूत
होने वाला आत्मघात
और पथ कोई भी शेष
नहीं अब मेरे आगे!

(घ) मैंने खुद को तुम्हारे हाथों में
इस जंगल को छोटा करने नहीं सौंपा-कुल्हाड़ी की तर
एक रंग भरी कूची की तरह
मैंने खुद को तुम्हारे हाथों में दिया।

खण्ड-ख

निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के उत्तर दीजिए : 12×3=3

2. 'उर्वशी' काव्य-कृति के तृतीय अंक के प्रतिपाद्य की समी कीजिए।

3. 'उर्वशी' काव्य-कृति के तृतीय अंक के काव्य-सौन्दर्य सोदाहरण आकलन कीजिए।

4. 'अंधायुग' गीतिनाट्य के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए।

5. पठित कृति 'अंधायुग' के आधार पर गांधारी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

6. अज्ञेय-विरचित 'बावरा अहेरी' शीर्षक कविता के भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष की समीक्षा कीजिए।

7. 'प्रेत का बयान' (नागार्जुन) *अथवा* 'एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन' (मुक्तिबोध) शीर्षक कविता की संवेदना पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-ग

8. ***किन्हीं तीन*** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 4×3=12

(क) "उसे हटाओ मत, प्रकाश के पूरा खुल जाने से,
जीवन में जो भी कवित्व है, शेष नहीं रहता है।"
— किसने, किससे और किसे न हटाने की बात की है?

(ख) "इन प्रफुल्लित प्राण-पुष्पों में मुझे शाश्वत शरण दो,
गंध के इस लोक से बाहर न जाना चाहता हूँ।
मैं तुम्हारे रक्त के कण में समाकर
प्रार्थना के गीत गाना चाहता हूं।
— प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों का सन्दर्भ एवं आशय बताइए।

(ग) "यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है।"
— कवि ने क्यों ऐसी टिप्पणी की है?

(घ) पठित कृति के आधार पर युयुत्सु का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "किन्तु नहीं वे प्रेमी आये
और मछलियाँ सूख गयी हैं — कंकड़ हैं अब।
आह! जहाँ मीनों का घर था
वहाँ बड़ी मैदान हो गया॥"
— यहाँ कवि ने क्या कहना चाहा है?

(च) "माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।
किन्तु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।"
— काव्य-पंक्तियों का तात्पर्य बताइए।

(Old Syllabus)

Full Marks : 80

खण्ड-क

निम्नलिखित अवतरणों में से ***किन्हीं तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) कट गया वर्ष ऐसे जैसे दो निमिष गये,
प्रिय! छोड़ गंधमादन को अब जाना होगा,
इस भूमि-स्वर्ग के हरे-भरे, शीतल वन में
जानें कब राजपुरी से फिर आना होगा!

(ख) कौन था कनु, वह,
तुम्हारी बाँहों में
जो सूरज था, जादू था, दिव्य था, मन्त्र था
अब सिर्फ मैं हूं, यह तन है, और याद है!

(ग) उस तन्मयता में
तुम्हारे वक्ष में मुँह छिपा कर
लजाते हुए
मैंने जो-जो कहा था
पता नहीं उसमें कुछ अर्थ था भी या नहीं!

(घ) दैन्य दानव। क्रूर स्थिति।
कंगाल बुद्धि : मजूर घर-भर!
एक जनता का — अमर वर :
एकता का स्वर।
— अन्यथा स्वातंत्र्य-इति।

(ङ) समय आ गया है
जब तब कहता है सम्पादकीय
हर बार दस बरस पहले मैं कह चुका होता हूँ
कि समय आ गया है।

खण्ड-ख

निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के उत्तर दीजिए :

12×3=36

2. 'उर्वशी' काव्य के तृतीय अंक के आधार पर पुरुरवा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'उर्वशी' काव्य-कृति की समग्रता के सन्दर्भ में उसके तृतीय अंक के महत्व का आकलन कीजिए।

3. 'कनुप्रिया' काव्य के 'इतिहास' खण्ड की 'विप्रलब्धा' शीर्षक कविता के भाव एवं कलापक्षीय सौन्दर्य पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

'कनुप्रिया' काव्य की लोकप्रियता के कारणों को रेखांकित कीजिए।

4. काव्य-संवेदना की दृष्टि से 'नदी के द्वीप' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पठित कविताओं के आधार पर नागार्जुन की काव्य-कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

5. काव्य-संवेदना और शिल्प की दृष्टि से सर्वेश्वरदयाल सक्सेना-विरचित 'अपना चेहरा' शीर्षक कविता विवेचन कीजिए।

अथवा

मुक्तिबोध की कविताओं की प्रमुख कलापक्षीय विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

खण्ड-ग

6. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

5×4=20

(क) "इन्द्रियों के मार्ग से अतीन्द्रिय धरातल का स्पर्श, यही प्रेम की आध्यात्मिक महिमा है।" — दिनकरजी के इस कथन का आशय बताइए।

अथवा

"और मिले जब प्रथम-प्रथम तुम विद्युत चमक उठी थी
इन्द्रधनुष बनकर भविष्य के नीले अँधियाले पर।"
— प्रस्तुत काव्य-पंक्तियो का सन्दर्भ एवं तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) "अर्जुन की तरह कभी
मुझे भी समझा दो
सार्थकता है क्या बन्धु?"
— इन काव्य-पंक्तियों में निहित प्राचीन कथा-प्रसंग का खुलासा कीजिए।

अथवा

"और चारों ओर
एक खिन्न दृष्टि से देख कर
एक गहरी साँस लेकर
तुमने असफल इतिहास को
जीर्णवसन की भाँति त्याग दिया है।"
— यहाँ इतिहास को क्यों असफल कहा गया है?

(ग) 'एक पीली शाम' शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य क्या है?

अथवा

कवि अज्ञेय का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(घ) "यदि हम रचना चाहते हैं
तो तूलिका का एक रंगाघात
एक डबडबाया क्षण
एक गंध भरी साँस से
कुछ भी रच सकते हैं,
हाँ, यदि हम रचना चाहते हैं।"
— इन काव्य-पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है?

अथवा

'शाश्वत सत्य' शीर्षक कविता का सन्देश क्या है?